अभ्यास के माध्यम से शिक्षा : प्रारम्भिक शिक्षा में डिप्लोमा के पाठ्यक्रम का विहंगावलोकन

शालिनी झा

प्रारम्भिक शिक्षा में डिप्लोमा का कोर्स दो साल का होता है, जो राज्य शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा तैयार किया गया है ताकि नामांकित विद्यार्थियों को कौशल वृद्धि का अवसर मिल सके और उनकी विशेषज्ञता के स्तर को प्रखर किया जा सके। पाठ्यक्रम को इस तरह से डिज़ाइन किया गया कि यह नियमित पाठ्यक्रम के माध्यम से दिए जाने वाले प्रशिक्षण के स्तर के बराबर हो।

कोर्स की संरचना भले ही अलग थी लेकिन डिप्लोमा विद्यार्थियों को जो प्रशिक्षण प्रदान किया गया था वह उनके कौशल का उतना ही प्रतिपादन करता है जितना कि एक नियमित पाठ्यक्रम में नामांकित विद्यार्थियों का। प्रशिक्षुओं को सप्ताह में एक बार कक्षा में पढ़ने के लिए आना होता था, या तो शनिवार को या रविवार को, जहाँ वे पाठ्यक्रम में बताए अनुसार किसी स्कूल में पढ़ाते थे। इस प्रकार प्रशिक्षुओं को न केवल प्रशिक्षित किया गया और उनके कौशल को उन्नत किया गया, बल्कि उन्हें व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करने का अवसर भी प्रदान किया गया। शिक्षण, प्रशिक्षण और व्यावहारिक भागीदारी, जो एक अति आवश्यक घटक था, के इस सन्तुलित संश्लेषण के कारण प्रशिक्षु अपनी प्रतिभा निखारने तथा तकनीकी और व्यावहारिक रूप से एक सुयोग्य प्रशिक्षक बनने में सक्षम हुए।

पाठ्यक्रम

गहन विचार-मन्थन और संशोधन के कई चक्रों के बाद जो अन्तिम पाठ्यक्रम बनाया गया उसकी तुलना नियमित प्रणाली के साथ की जा सकती थी। कोर्स की सभी आवश्यक सामग्रियों को पाठ्यक्रम में शामिल किया गया था और इसे विशेष रूप से इस समूह की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाया गया था। शिक्षण-अधिगम सामग्री ऐसी थी जिसे शिक्षक आसानी से समझ सकें और अपने मन-मस्तिष्क में बिठा सकें। गुणवत्ता को सर्वोच्च प्रमुखता दी गई।

परस्पर-विभागीय सहयोग

प्रशासनिक कार्यों की एक समेकित शृंखला बनाई गई थी जो प्रशिक्षुओं को कोर्स के प्रशिक्षकों, स्रोत व्यक्तियों, एससीईआरटी और केन्द्र के साथ जोड़ती थी। इसने एक मजबूत संरचना बनाने में मदद की जिसके कारण प्रशिक्षुओं को सारी पाठ्यक्रम सामग्री, कार्यशालाएँ और कक्षाएँ समय पर प्राप्त हो पाईं। कोर्स की संरचना और पाठ्यक्रम सामग्री को सभी लिंक पर अपडेट किया गया था और विभागीय अन्त:सम्बन्धन और संचार के परिणामस्वरूप पाठ्यक्रम सामग्री पाने में प्रशिक्षुओं कोई देरी नहीं हुई।

डिजिटलीकरण और उपयोग में आसानी

प्रशिक्षुओं को कोर्स की सभी सामग्री हार्ड कॉपी के रूप में दी गई और साथ ही कोर्स का कार्यक्रम और संरचना के सभी विवरणों को ऑनलाइन भी उपलब्ध कराया गया। शिक्षण-अधिगम सामग्री के पूरक के रूप में आईसीटी सामग्री का उपयोग किया गया। कोर्स के दौरान प्रौद्योगिकी का सर्वोत्कृष्ट उपयोग किया गया और प्रशिक्षुओं को शिक्षण के लिए लैपटॉप और स्मार्टफोन के उचित उपयोग के बारे में भी बताया गया। प्रशिक्षण कार्यशालाओं के दौरान प्रशिक्षुओं को सीडी का उपयोग करके लगातार वीडियो आदि दिखाए गए। पूरी प्रक्रिया और कार्यक्रम को नियमित रूप से ऑनलाइन अपडेट किया गया था।

पंजीकरण

विद्यार्थियों का एक छोटा समूह पंजीकृत किया गया। स्रोत व्यक्तियों (आरपी) ने क्षमता निर्माण के लिए प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन किया। ये आरपी मूल सलाहकारों से जुड़े हुए थे।

मूल्यांकन

प्रशिक्षुओं को जो असाइनमेंट दिए गए थे, उनमें कक्षा-आधारित व्यावहारिक प्रश्न पूछे गए थे। इन उत्तरों का गम्भीर रूप से विश्लेषण और परीक्षण किया जाना था। प्रशिक्षुओं के व्यावहारिक अनुभव के आधार पर असाइनमेंट दिए गए थे जो अधिगम-प्रक्रिया का महत्वपूर्ण हिस्सा थे। इन्हें शिक्षण-अनुभव में प्रशिक्षुओं को होने वाले अनुभव को ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया था और इसलिए प्रशिक्षुओं को असाइनमेंट करते समय अपने मानसिक संकायों का पूरा उपयोग करना होता था। असाइनमेंट के प्रश्नों का विश्लेषण

अधिगम की प्रक्रिया के बारे में विद्यार्थियों की समझ का परीक्षण था और उनके व्यावहारिक अनुभवों का व्यक्तिनिष्ठ आलोचनात्मक मूल्यांकन था ताकि विद्यार्थी अनुचित तरीक़ों से असाइनमेंट के प्रश्नों का उत्तर न दे पाएँ।

इसके अलावा कैम्पस में यह सुनिश्चित करने के लिए अक्सर स्पॉट-चेकिंग की जाती थी कि मॉड्यूल ठीक तरीक़े से और योजना के अनुसार समझाया जा रहा है।

अधिगम की योजना

शिक्षण विधि या ज्ञान की गहराई को पूरी तरह से बाल-केन्द्रित होना था। इसका उद्देश्य यह था कि इसे इतना लचीला बनाया जाए कि आसानी से बच्चे के स्तर तक पहुँचा जा सके। सीखने की योजनाओं पर भी विशेष ध्यान दिया गया, जिसमें स्कूल पर आधारित बहुत सारी गतिविधियाँ शामिल थीं। इसके लिए एक अलग पोर्टफ़ोलियो और रजिस्टर रखा गया था। इसके अलावा प्रशिक्षुओं को निर्देश दिया गया था कि वे सारी गतिविधियों की एक डायरी बनाएँ जिससे कि उनके स्वयं के प्रदर्शन की रिकॉर्डिंग हो सके। ये सभी कक्षा-आधारित समस्याओं के लिए स्कूल-आधारित क्रियात्मक शोध योजना का हिस्सा थे। सूक्ष्म अवलोकन और मूल्यांकन इस पूरी प्रक्रिया के प्रमुख कार्य थे।

SCS स्क्रीनिंग टीम में 40-50 सदस्य शामिल थे। उनका कार्य प्रशिक्षुओं की सहायता करना, उनकी निगरानी करना और उसके बारे में एक विस्तृत रिपोर्ट प्रदान करना था।

प्रशिक्षुओं के लिए नियमित रूप से उनकी कार्यशालाओं में भाग लेना आवश्यक था।

समापन टिप्पणी

इन सभी अलग-अलग और पूरक अभ्यासों के एक संयोजन के परिणामस्वरूप डिप्लोमा कोर्स प्रशिक्षण कार्यक्रम को बहुत सफलता मिली जिसे डीएलएड के तहत नए शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के इरादे से बनाया गया था और नियमित कोर्स के मॉड्यूल की बराबरी पर रखा गया। यह स्पष्ट था कि इस कार्यक्रम के अन्त में इसमें शामिल सभी लोगों की मेहनत रंग लाई और प्रशिक्षुओं की तकनीक, कौशल और ज्ञान का संवर्धन हुआ और वे अपने क्षेत्र में आगे बढ़े। पुनरावलोकन करें तो यह कहा जा सकता है कि डिप्लोमा कोर्स एक सफल प्रयोग रहा और इसे जारी रखना चाहिए।

शालिनी झा वर्तमान में पूर्णिया, बिहार में एक सरकारी माध्यमिक विद्यालय की शिक्षिका हैं। उन्होंने शिक्षा में स्नातक और अँग्रेज़ी में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की है। वे बिहार के पूर्णिया जिले में ODEAL में एक स्रोत व्यक्ति, मास्टर ट्रेनर और आपदा प्रबन्धन समन्वयक हैं। उनसे *shalinijha443@gmail.com* पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल